सं0एफ0 15-14/85 पी0एन0-II
भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
नई दिल्ली, दिनांक 9-5-1985

विषय: शैक्षणिक प्रणाली में सुधार/परिवर्तन करने के लिए सुझाव ।

.....

महोदय,

मुझे शिक्षा मंत्री को सम्बोधित आपके पत्र सं0 शून्य दिनांक 30-4-85 की रूपान्यवाद पावती भेजने का निदेश हुआ है । आपके सुझावों/विचारों को नोट कर लिया गया है ।

भवदीय,

(नरेन्द्र प्रताप सिन्हा)
अवर सचिव

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड

INLAND LETTER CARD

INDIA 35 SERVICE

1985

श्री इ० नागराज शर्मा

श्री भजनाश्रम

श्री नर्मदांचल, अमरकन्टक

जिला-शहडोल, मध्य प्रदेश

PIN CODE

THIRD FOLD HERE

Sender's Name and address :-

अनुभाग अधिकारी/Section Officer

शिक्षा विभाग/Deptt. of Education

भारत सरकार/Govt. of India

नई दिल्ली/New Delhi

PIN CODE

NO ENCLOSURES ALLOWED

METRO 119

TO ... HERE

प्रति,

जनवाणी कार्यक्रम
कमरा नम्बर-512, दूरदर्शन केन्द्र
आकाशवाणीभवन, संसदमार्ग
नई दिल्ली ।

दिनांक 4 -5-1985

विषय : जनवाणी कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा में मौलिक परिवर्तन हेतु सुझाव -

= प्रत्येक मनुष्य समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व चाहता है ।

= प्रत्येक मनुष्य बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि से सुखी होना चाहता है ।

= शिक्षा का मूल उद्देश्य उक्त दोनों बिन्दुओं से स्पष्ट हो जाता है कि "व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी" होना आवश्यक है ।

= शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्य को पाने में वर्तमान शिक्षा पूर्णरूप से असफल सिद्ध हो चुकी है । इसी कारण शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन की बात बारम्बार कही जा रही है ।

= वर्तमान शिक्षा में असफलता का प्रधान कारण है, शिक्षा दर्शन का समृद्ध न होना ।

= इसी के फलस्वरूप वर्तमान शिक्षा न तो मानव को व्यवहार में सामाजिक बना पाई और ना ही व्यवसाय में स्वावलम्बी ही । इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य को असामाजिक बनना सुलभ हो गया, क्योंकि "मनुष्य अज्ञानतावश जन्म से ही गल्ती करता है और इसमें सही करने की सम्भावना बनी रहती है ।" यही सही करने की सम्भावना को सफल बनाना ही शिक्षा का मौलिक दायित्व है ।

= शिक्षा की परिपूर्णता ही व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्र में सामरस्यता को स्थापित एवं वैभवित कर सकती है।" सामरस्यता स्थापित होने पर ही विश्वशांति की कल्पना साकार हो सकेगी ।

= सामरस्यता का अर्थ मानवीय मूल्यों की पहिचान एवं उसके निर्वाह करने की क्षमता से है । यही मौलिक उपलब्धि है । मौलिक उपलब्धि के लिये

शासन क्या कटिबद्ध है ? क्या प्रयत्नशील है ? क्या अभी तक जो परिवर्तन किया गया वह मौलिक परिवर्तन है ?

1. प्रतिभाविहिनता का आरक्षण एवं प्रतिभाकी उपेक्षा क्या मौलिक परिवर्तन है ? या प्रतिभाविहीन को प्रतिभावान बनाना और प्रतिभा का सम्मान करना ।

2. विषयों की संख्या घटाने बढ़ाने से शिक्षा में मौलिक परिवर्तन होगा या उसे व्यवहारिक बनाने से ?

3. शिक्षा काल खंडों के घटाने बढ़ाने से मौलिक परिवर्तन होगा या उसके उद्देश्य की पूर्ति के अर्थ में कार्य करने से ?

4. भाषाओं की संख्या घटाने बढ़ाने से क्या शिक्षा में मौलिक परिवर्तन होगा या उसमें एक रूपता लाने से ?

5. सम्प्रदाय, जाति, पंथ के नामों पर शिक्षण संस्थाओं को चलाने से क्या मौलिक परिवर्तन होगा या भारतीय मानस अथवा मानवमानस को संस्कार रूप प्रदान करने से ?

6. क्या शासकीय, अर्द्धशासकीय, अल्पशासकीय और अशासकीय शिक्षण संस्थाओं की संख्या, पठनपाठन, शिक्षा शुल्क, साधन सामग्री एवं शैक्षणिक क्षमता की विविधता में मौलिक परिवर्तन होगा या इनके एक रूपता में ?

7. क्या साक्षरता, विज्ञान और तकनिकी आकलनात्मक ज्ञान ही मौलिक परिवर्तन का उद्देश्य है या व्यवहारिक होने से है ?

8. जैसे-जैसे शिक्षित व्यक्तियों की संख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे अपराधों की भी संख्या बढ़ती गई, मौलिक परिवर्तन क्या इसे ही कहते हैं या सचरित्रता और सयंमता को ?

9. मानव तथा मानवीय चेतना के अध्ययन के बिना ही क्या मानव मूल्यों की पहिचान हो सकेगी या उसके सर्वांगीण अध्ययन से ?

•• क्रमशः 3 ••

10. वर्तमान शिक्षा में मानव मूल्यों का समावेश किया गया है क्या ? यदि समावेश हुआ है तब यथास्थिति ही मानव चरित्र है क्या ? यदि यथास्थिति को मानव चरित्र न माना जाय तो शिक्षा विभाग द्वारा पढ़ाये गये मानव मूल्यों का क्या अर्थ हुआ और शिक्षा विभाग ने मानव मूल्यों को पहिचाना है क्या ?

11. मानव मूल्यों की पहिचान सहित अध्ययन कराने के लिये शिक्षा प्रारूप पूर्ण कार्यक्रम सहित एन.सी.आई.आर.टी. को भेजा गया, जिसे बिना अध्ययन किये ही यह प्रत्युत्तर दिया गया कि "हमारी परिषद अपने शिक्षा क्रम, पाठ्यक्रम, तथा पाठ्यपुस्तकों में मानव मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान देती रही है। यदि आप परिषद द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखें तो आशा है आप इस दृष्टि से संतुष्ट हो सकेंगे।" इस संदर्भ में यही कहना चाहता हूँ कि मानव मूल्यों की प्रामाणिकता को स्पष्ट करने से मौलिक परिवर्तन होगा या हठवादिता से ?

अस्तु मेरे सुझाव का प्राणतत्व यही है कि प्रत्येक विद्यार्थी में प्रतिभा और व्यक्तित्व का संतुलित उदय हो, जिससे वह व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी सिद्ध हो सके। व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलम्बन प्राप्त करने हेतु शिक्षा की रूपरेखा जो मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) पर आधारित है साथ में संलग्न है। यदि शासन मेरे सुझाव से सहमत हो, तो इसका विस्तार रूप से कार्यक्रम उपलब्ध है। इसे शिक्षा मनीषियों द्वारा अध्ययन करवाकर शिक्षा में मौलिक परिवर्तन किया जा सकता है। मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मध्यस्थ दर्शन पर आधारित व्यावहारिक शिक्षा देने के लिये कोई अतिरिक्त व्यय नहीं आयेगा।

दर्शन उपलब्ध है, सुअवसर प्राप्त है, अधिकार शासन में सन्निहित है। इसके अध्ययन के पश्चात् शिक्षा में समावेशित होने पर राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। इसी में मानव का शुभ है।

संलग्न -

1. एन.सी.आई. आर.टी. द्वारा प्रेषित पत्रोत्तर की प्रति
2. मानवीय शिक्षा प्रारूप की प्रति

भवदीय

(ए. नागराज शर्मा)
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल
अमरकंटक, जिला - शहडोल (म.प्र.)